Indian J. Soc. & Pol. 08 (01) :75-78 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

बौद्ध नीति : एशियाई देशों की निकटता हेतु सार्थक पहल

ममता मणि त्रिपाठी[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म भारत की भ्रमण परंपरा से निकला धर्म और महान दर्शन है। विश्व के लगभग 54 करोड़ अनुयायियों के साथ आज यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है। आज चीन, जापान, श्रीलंका, सिंगापुर, दक्षिणी कोरिया, उत्तरी कोरिया समेत कुल 18 देशों में बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म है भारत बौद्ध धर्म का उद्गम स्थल है पर यहाँ की जनसंख्या कुल 84 लाख है। हाल के कुछ वर्षों में विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बुद्ध नीति पर रहा है। बुद्ध कूटनीति के जरिये भारत अपनी Look east policy से Act east policy को सहारा देकर उसे एशिया की सांस्कृतिक पुल की तरह पेश करती है। विदेश नीति में सांस्कृतिक मूल्य तथा विचार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय संपर्को को बढ़ाने हेतु सांस्कृतिक कूटनीति देश की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण माध्यम होता है। मृदुशक्ति सकारात्मक मृदुशक्ति में सांस्कृतिक विशिष्टताएँ, राजनीतिक मूल्य तथा दर्शन, चलचित्र, आध्यात्मिक ज्ञान, खान–पान, कला संस्कृति, नृत्य, अहिंसा का अस्त्र तथा धार्मिक बहुलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में एशियाई देशों की निकटता हेतु प्रधानमंत्री मोदी द्वारा बुद्ध नीति के माध्यम से जो सार्थक पहल की गयी उस पर विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा।

KEYWORDS: *सांस्कृतिक संबंध, भारत की विदेश नीति, बौद्ध नीति, आष्टांगिक मार्ग, नव उदारीकरण एवं भूमण्डलीकरण, बौध सर्किट।*

मृदु शक्ति की अवधारणा सर्वप्रथम आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के जोसेफ निये द्वारा विकसित की गयी उन्होंने इसका प्रयोग 1990 में लिखी गयी पुस्तक Beyond to lead: The changing nature of American power में किया है। इसमें कोई दो राय नही है कि भारत सरकार द्वारा इन दिनों मृदु शक्ति बनने की दिशा में काम किया जा रहा है। हमारे देश की एक समृद्ध पृष्ठभूमि मृदु शक्ति की रही है। सम्राट अशोक जो भीषण युद्धों के कारण कठोर नीति के पर्याय बन चुके हैं बौद्ध धर्म को अपना कर मृदु शक्ति के कायल बन गये हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के 74वें सत्र के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया के नेताओं का भारत के लम्बे पोषित विश्वास, विश्वास और विशेष रुप से शांति के मूल्य में विश्वास और योगदान के बारे में एक स्पष्ट आह्वान दिया। वैश्विक शांति और सौहार्द के लिए भारत के योगदान पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने दुनिया के नेताओं से कहा–'भारत ने दुनिया को बुद्ध दिया और युद्ध नही।' उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि भारत को विश्व के लिए उपहार बुद्ध का ज्ञान और युद्ध के बजाय शांति का संदेश है। प्रधानमंत्री मोदी आतंकवाद के मजबूत विरोधी हैं। मई 2014 में जबसे नरेन्द्र मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री के रुप में बागडोर सँभाली तबसे वे भारत की बौद्ध विरासत को पुनः प्राप्त करने और उसका लाभ उठाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने अपने भाषणों में दुनिया को भारत की इस अनूठी विरासत के बारे में याद दिलाया। भारत बौद्ध धर्म के बारे में वकालत करने और दुनिया के लिए इसकी प्रासंगिकता की सांस्कृतिक कूटनीतिक माध्यम से राष्ट्रों की विविधता के बीच छाप बना सकता है। बौद्ध धर्म दुनिया में सांस्कृतिक कूटनीति को बढ़ावा देने का नया साधन है। बौद्ध धर्म Soft power एवं सांस्कृतिक कनेक्टिविटी का एक बड़ा स्रोत है। दुनिया की आबादी का 6 प्रतिशत हैं आज दुनिया की 97 प्रतिशत बौद्ध आबादी एशियाई महाद्वीप में रहती है। भारत इन सभी बौद्ध जनसंख्या के लिए तीर्थस्थल है। भारत बौद्ध धर्म की उत्पत्ति का मूल देश होने के कारण कई कारणों से बौद्ध कूटनीति को बढ़ावा देने के प्रति वैधता का दावा करने की स्थिति में है। भारत बौद्ध धर्म का रक्षक रहा है क्योंकि उसने तिब्बत के परम पावन दलाई लामा को चीन की इच्छा के विरुद्ध और चीन के साथ अपने राजनयिक संबंधों की कीमत पर निवास और व्यवहार का स्थान दिया है। भारत की विश्व में बौद्ध धर्म के रक्षक की छवि है। भारत नें बौद्ध धर्म की विभिन्न धाराओं जैसे थेरवाद बौद्ध धर्म, महायान बौद्ध धर्म, महायान बौद्ध सोक्कागकाई और निकिरेन डायशिन के बौद्ध धर्म आदि के साथ अच्छे संबंध रखे हैं। बौद्ध धर्म भारत की आध्यात्मिक परंपराओं और खजाने मे से एक है। भारत बौद्ध धर्म का मूल देश है और बौद्ध तीर्थस्थलों की भौतिक उपस्थिति भारत को दुनिया भर में बौद्ध अनुयायियों के लिए आकर्षण का सबसे महत्वपूर्ण देश बनाती है और उन लोगों के लिए भी जो बौद्ध धर्म के साथ प्रयोग करना चाहते हैं। नया भारत दुनिया के विभिन्न देशों के साथ अपने धार्मिक तथा विश्वास आधारित संबंधों को बनाने हेतु अच्छी तरह तैयार है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बौद्ध धर्म के फलस्वरुप सांस्कृतिक कनेक्टिविटी के साथ कूटनीति के एक शक्तिशाली उपकरण में अनुवाद किया गया है। बौद्ध धर्म के आधार पर एशियाई देशों के साथ संबंधों को गहरा करना संभवतः परकार के बड़े नीतिगत उद्देश्यों जैसे कि Naboughood first policy और Act east policy को आगे बढ़ा सकता है।

भारत के पास सांसकृतिक कूटनीति का एक लम्बा इतिहास है भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0नेहरु ने इसके महत्व को समझते हुए भारतीय सांस्कृतिक संपर्क परिषद की स्थापना की थी।

1: Corresponding Author

भारत के आधुनिक राष्ट्रवाद को आकार देने में भारत के बाहरी रिश्तों पर उसके सांस्कृतिक रिश्तों में मोदी ने भारतीय प्रवासियों के बीच बुद्ध वाद और योग पर केन्द्रित किया है वर्तमान संदर्भ में 25 करोड़ भारतीय प्रवासी भारत के दूर के नागरिक बने हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी का दक्षिण एशियाई प्रवासियों के साथ संपर्क अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण रिश्ता स्थापित करने के हिसाब से बेहद महत्वपूर्ण है। मोदी सरकार का प्राथमिक एजेण्डा प्रवासी निवेश को भारत में आकर्षित करना है। सांस्कृतिक भागीदारी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य है। भारत की विश्वगुरु की पृष्ठभूमि और इतिहास की वैश्विक मान्यता हिन्दू बौद्ध की संयुक्त सांस्कृतिक पीठ का ही परिणाम है। आज भारत वैश्विक राजनीति में अपनी भूमिका नये सिरे से तलाश रहा है इन परिस्थितियों में भारत भूमि या हिन्दू जनित बौद्ध धर्म के विश्व भर में फैले अनुयायी ग्रंथ, संस्थान और विचार संपदा भारत को गुरुत्तर स्थान पर प्रतिष्ठित करते हुए दृष्टिगत होते हैं। बौद्ध धर्म आधारित चार आर्य सत्य तथा अष्टांगिक मार्ग कई यूरोपीय देशों में अपने विचार प्रभाव का विस्तार करता दृष्टिगोचर हो रहा है। विश्व में अनेक राष्ट्र जिन चार आर्य सत्य के मार्ग पर चल रहे हैं इस आर्य सत्य सिद्धान्त की वैज्ञानिकता विश्व भर में भारतीयता को श्रद्धा की दृष्टि से देखने हेतु विकसित किया है। बुद्ध धर्म में चार आर्य सत्य अष्टांग मार्ग में प्रस्तुत किये हैं जो सूत्र दिये हैं उनकी आज विज्ञान आधारित मान्यता निर्विवाद हो गयी। ये अष्टांग मार्ग हैं– सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्म, सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि जीवन के प्रारंभ से लेकर समाधि तक के प्रत्येक अंश को अपने में समाहित करने वाले आर्य सत्य की प्रासंगिकता है।

आज भारतीय विदेश नीति में दो शब्द निर्भीकता और बहुलता से कहे जा रहे पश्चिम से जुड़ो तथा पूर्व की ओर करे। (Act east policy) अर्थात पश्चिम से तकनीकी सकारात्मक पक्ष को अपनाते चलो और उसमें सांस्कृतिक शैक्षणिक विश्वशांति पर्यावरण आधारित सकारात्मक प्रवाहित करते चलो और पूर्व की ओर देखते रहें, संवाद बढ़ाने की इस नीति के अन्तर्गत आने वाले अधिकांश देशों में बौद्ध धर्म का प्रभाव इस नीति के तरफ अग्रसर करना रहा है। भारत का अपने से पूरब की ओर जुड़ाव प्राचीन काल से ही धार्मिक एवं राजनीतिक आधारों पर रहा। पूर्वी एशिया के देशों में प्राचीन कला एवं स्थापत्य के आज भी नमूने मिलते हैं, बौद्ध कालीन स्तूप और शिलालेख बौद्ध धर्म की उन देशों में उपस्थिति का प्रमाण है। सम्राट अशोक के काल में महेन्द्र तथा संघमित्रा ने श्रीलंका के रास्ते पूर्वी एशिया का सफर धम्म प्रचार के उद्देश्य से किया जाता था। चोल शासकों के काल में वर्तमान इंडोनेशिया तक विजय पताका लहराई गयी जो एक तरफ से राजनीतिक संबंधों का सूचक था। इस तरह से पूर्व एशिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया से भारत ने अपने रिश्ते की शुरुआत अशोक के समय से ही कर दी थी जो इतिहास के विभिन्न कालों से गुजरते हुए गुटनिरपेक्ष आंदोलन में सहभागी बनते हुए पूर्व की ओर देखो नीति से लेकर वर्तमान मोदी सरकार के दूरदर्शी विदेश नीति के समयपूर्व की ओर सक्रियता नीति तक जा पहुँची। भारत ने जब नव उदारीकरण एवं भूमण्डलीकरण के जरिये नयी आर्थिक नीति को लागू करते हुए अपने बाजारों को खोला था और स्वदेशी उद्योग धंधों को भी विदेश में फलने फूलने का अवसर प्रदान किये थे भारत ने पूर्व की ओर देखो नीति की उद्घोषणा की थी। Act east policy का ये उद्देश्य है–

1. भारत और एशिया प्रशान्त क्षेत्र के बीच क्षेत्रीय द्विपक्षीय बहुपक्षीय समझौता के माध्यम से आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंध विकसित करना।
2. भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों तथा पड़ोसी राज्यों के बीच मधुर संबंध विकसित करना।
3. आसियान क्षेत्र में चीन के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना वर्ष 2016–2017 में भारत आसियान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 71.6 अरब डॉलर पहुँच गया जो 1990 के दशक में 2 अरब डॉलर था।
4. Act east policy के तहत आसियान देशों के साथ संबंध सफल बनाने के लिए सरकार 3C-Culture, Connectivity & Commerce के विकास पर जोर दिया है। आसियान एक बहुत मजबूत आर्थिक ब्लॉक है इसकी कुल जनसंख्या 644 मिलियन, सभी देशों की कुल संपत्ति 2.7 ट्रिलियन डॉलर औसत प्रति व्यक्ति आय 4200 है यदि भारत आसियान को संयुक्त रुप से देखे तो अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर हो जायेगी, जो अमेरिका तथा चीन के बाद तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था होगी।

भारत बौद्ध धर्म को Soft power के रुप में लेते हुए भारत के ऐतिहासिक नेतृत्व के प्रति एक बार पुनः विश्वास दिलाने तथा बौद्ध संपर्कों को प्रस्तुत करने के जरिये निश्चित रुप पर चीन के प्रभावों को कम करना था। राष्ट्रपति जिनपिंग ने सक्रिय तौर पर बौद्ध धर्म के कार्ड को खेला है और बीजिंग लगातार बौद्ध मतावलम्बियों के जरिये अपने एजेण्डों को बढ़ाती रही है। बौद्ध धर्म के प्रभावकर्ताओं और चिंतकों से रिश्ता बनाने के जरिये दलाईलामा के नेतृत्व में तिब्बती बौद्धों के तहत एकता को सुनिश्चित करते हुए Soft power कूटनीति का प्रयोग करना चाहती है। वर्तमान समय में भारत की Look east और Act east policy ने बुद्ध कूटनीति के तहत एक निश्चित बदलाव लाने पर बल दिया जा रहा है। भारत के धम्म और संघ का मूल स्थान होने के नाते पूर्वी क्षेत्र के देशों में इसके प्रभाव डालने की कोशिश कर रहा है। प्राचीन बौद्ध धर्म भारत आसियान की आध्यात्मिक धुरी है क्योंकि इस पूरे क्षेत्र में बौद्ध बोधगया जैसे प्रतिष्ठित स्थानों जहाँ बुद्ध का बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था कि यात्रा पर आते हैं।

बौद्ध धर्म के सांस्कृतिक, आर्थिक, कूटनीतिक और सामरिक आयाम है। यह उन मूल्यों के लिए भी जाना जाता है जो अनुयायियों के लिए खड़े हैं उनकी वकालत करते हैं उनका प्रचार करते हैं तद्नुसार भारत ने राष्ट्रीय हितो को आगे बढ़ाने में बौद्ध धर्म को नरम शक्ति के रुप में तैनात करने के लिए अतीत में और हाल के दिनों में कई पहल की है। सबसे पहले नरेन्द्र मोदी ने

बौद्ध धर्म को एक नियमित सुविधा और सामान्य रुप से उन विदेशी यात्राओं पर अपने भाषण का हिस्सा बनाने के लिए एक बिन्दु बनाया है जहाँ विशेष रुप से पर्याप्त बौद्ध अनुयायी हैं वह उन देशों के साथ साझा बौद्ध विरासत और संस्कृति को नियमित आधार पर उजागर करने के लिए जागरुक प्रयास कर रहा है। इस तरह की यात्राओं में वह बौद्ध मंदिरों का दौरा करते रहे हैं और बुद्ध अनुयायियों को समझाने के लिए प्रार्थना करते रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी बौद्ध धर्म की भूमिका और दुनिया भर में विशेष रुप से आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष प्रबन्धन और संकल्प में इसकी प्रासंगिकता के बारे में काफी सशक्त रहे हैं। यह भारत और विश्व दोनों के विकास के लिए बौद्ध धर्म के महत्व को स्वीकार करते रहे हैं।

चीन तथा भारत ने केवल एशिया में बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में एक प्रतिद्वन्दी शक्ति के रुप में विकसित हुए हैं। चीन विश्व को दिखाने की यह कोशिश कर रहा है कि वह चीन ही है जिसने दुनिया को बौद्ध धर्म दिया है। चीन की BRI बेल्ड एंड रोड इनिशिटिव एक राजनीतिक आर्थिक परियोजना है जिसे पुराने सिल्क रुट के साथ विकसित किया जा रहा है जिसके माध्यम से बौद्ध धर्म ने दुनिया के हिस्सों की यात्रा की। चीन की बौद्ध विरासत के प्रक्षेपण से एशिया के सांस्कृतिक क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की प्रबल इच्छा का पता चलता है। भारत तेजी से बौद्ध धरोहरों की तैनाती और बाहरी दुनिया के साथ सांस्कृतिक सीमा और सांस्कृतिक क्रांति के दिनों में बौद्ध धर्म विचारों का प्रसार कर रहा है।

भारत ने दलाई लामा को संरक्षण दिया 2011 में भारत ने बुद्ध के उद्बोधन की 2600वीं वर्षगांठ को चिन्हित करने के लिए वैश्विक बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया जो पहला प्रमुख बौद्ध सम्मेलन था। चीन ने मार्च 2017 में दलाई लामा को भारत द्वारा दिये गये निमंत्रण पर आपत्ति जताई जो बिहार के राजगीर में ''21वीं सदी में बौद्ध धर्म पर एक सेमिनार का उद्घाटन करने के लिए किया गया था।[5] चीन ने कभी भी दलाई लामा की गतिविधियों के कारण भारत को पराजित करने का अवसर नही छोड़ा।

भारत ने पर्यटन रोजगार व्यवसाय अंतर राज्य संबंध को मजबूत करने के साथ भारत में बौध स्थलों के लिए तीर्थ पर्यटन की संभावनाओं की चतुराई से पहचान की है इसके अनुसार भारत ने बौद्ध सर्किट के लिए शुभ शीर्षक के तहत मनोरंजन के साथ–साथ अपने बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए एक शानदार रणनीति की कल्पना की है। भारत ने खुद को दुनिया में बौद्ध धर्म के एक महत्वपूर्ण गंतब्य के रुप में पेश करने के लिए Transnation बौद्ध सर्किट की कल्पना की है।

मोदी ने ICCR में भाग लिया, भारशाखा के विदेशी कार्यालय ने सांस्कृतिक कूटनीति के साथ काम किया। भारत ने उपरोक्तानुसार बौद्ध धर्म पर 21वीं सदी में संगोष्ठी का आयोजन किया था। अक्टूबर 2016 में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा वाराणसी में 5वें अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध कान्क्लेव का आयोजन किया गया था जिसमें 34 देशों के 240 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। भारत ने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ एक अखिल एशियाई पहल की जो कभी बौद्ध धर्म सीखने की एक प्राचीन पीठ थी।

नरेन्द्र मोदी ने अपनी सांस्कृतिक कूटनीति को मजबूत बौद्ध की भूमिका के बारे में अपने विचारों और विश्वास में यह स्पष्ट किया है जो समकालीन दुनिया में निदेश नीति के संचालन के एक मजबूत साधन के रुप में उभरा है। 2014 में प्रधानमंत्री का पद सँभालने के तुरन्त बुद्ध की कूटनीति पर जोर देते हुए उन्होनें पूर्वी एशिया के लिए भारत के दृष्टिकोण में एक निश्चित बदलाव लाया। मोदी ने भूटान से जापान और चीन से म्यामार तक के उपमहाद्वीप और एशया के लिए अपने पहुँच बौद्ध धर्म को इन देशों मे भारत के पुलों मे से एक रुप में पेश किया है। भारतीय प्रधानमंत्री की पहली आधिकारिक यात्रा दूसरे बौद्ध देश जापान में हुई इसके पूर्व वह दक्षिण एशिया, भूटान, नेपाल के पड़ोसी देशों में किया। सितम्बर 2014 में अपनी पहली जापान यात्रा के दौरान उन्होंने जापानी पी0एम0 शिंजो आबे के साथ क्योटो में प्रतिष्ठित तोजी मंदिर का दौरा किया। उन्होंने टोक्यो में पवित्र ह्रदय विश्वविद्यालय में छात्रों से भी मुलाकात की और उन्होने कहा 'भारत भगवान बुद्ध की भूमि है, जो शांति के लिए रहते थे और दुनिया भर में शांति का संदेश फैलाते थे कि अहिंसक साधनों के माध्यम से भारत ने जीत हासिल की।

भारत मे मंगोलिया के साथ बौद्ध धर्म और लोकतंत्र का एक मजबूत संबंध है। मोदी की बौद्ध भूटान की पहली विदेश यात्रा ने उनकी विदेश नीति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों का संकेत किया। इसके बाद जापान की यात्रा के दौरान क्योटो के दो प्रमुख बौद्ध मंदिरों की यात्रा की। मोदी जी ने सितम्बर 2016 में वियतनाम का दौरा किया और क्वान सु पगोडा में भिक्षुओं के साथ बातचीत करते हुए कहा कि कुछ लोग युद्ध छेड़ने के लिए वियतनाम आये थे जबकि भारत बुद्ध और शांति के स्थायी संदेश के साथ आया था। मोदी जी ने नालंदा महाबिहार के पुरातात्विक के रुप में रेखांकित करने के लिए वियतनाम को धन्यवाद दिया। उन्होंने मई 2018 में अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संघ के सहयोग से संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित बुद्ध जयंती समारोह का उद्घाटन किया।

इस तरह भारत बौद्ध धर्म को Soft power के रुप में लेते हुए भारत के ऐतिहासिक नेतृत्व के प्रति एक बार पुनः विश्वास दिलाते हुए बौद्ध संपर्कों को प्रस्तुत करने के जरिये निश्चित तौर पर चीन के प्रभाव को कम करना था। राष्ट्रपति जिनपिंग ने सक्रिय तौर पर बौद्ध धर्म के कार्ड को खेला है बीजिंग लगातार बौद्ध मतावलम्बियों के जरिये अपने एजेण्डा को बढ़ाती रही है। बौद्ध धर्म के प्रभावकर्ताओं और चिंतको से रिश्ता बनाने के जरिये दिल्ली दलाई लामा के नेतृत्व में तिब्बती बौद्धों के तहत एकता को सुनिश्चित करते हुए Soft power के कूटनीति का प्रयोग करना चाहती है इसके जरिये दलाई लामा के बाद की परिस्थितियों में अपने लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका सुनिश्चित करना चाहती है। प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि भारत बौद्ध धर्म क वगैर अधूरा है। बुद्ध की शिक्षाएँ ऐसी सामाजिक व्यवस्था में विश्वास करती है जो न्याय, समानता, मानवतावाद के सिद्धान्त में विश्वास करती है।

वर्तमान में भारत की Look east और Act east policy न बुद्ध कूटनीति के जरिये एक निश्चित बदलाव लाने पर बल दिया जा रहा है भारत बुद्ध के धम्म एवं संघ का मूल स्थान होने के कारण पूर्वी क्षेत्र के देशों में इसके प्रभाव डालने की कोशिश कर रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय वास्तविकता बन गयी है। भारतीय वैदेशिक गलियारा में बौद्ध सर्किट शब्द बहुलता से जुड़ा है। हिन्दू बौद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जुड़े हुए देशों को बौद्ध सर्किट से जोड़ना और नये शैक्षणिक आयामों पर काम करते हुए एक नये नही अपितु प्राचीनतम आयाम के नए स्वरुप पर कार्य करना अभूतपूर्व अवसरों को जन्म देता है। हाल के चार पाँच सौ वर्षों में वैश्विक राजनीति सैन्य आर्थिक तकनीक तथा अन्य प्रकार के भौतिकवादी दृष्टिकोण से बेहतर प्रभावित हो रही है आज भारत को हिन्दू बौद्ध पृष्ठभूमि में संपूर्ण विश्व में चौतरफा संदेशवादी हो जाने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। बौद्ध सर्किट के राजनीतिक सिद्धान्त पर अधिकतम काम से भारत को वैश्विक नेतृत्व की पीठ का स्वाभाविक नैसर्गिक अधिकारी बनने का अवसर उपलब्ध किया जा सकता है। निश्चित रुप से भारत में एक नया राजनयिक है उसे बुद्ध कहा जा सकता है। 21वीं शदी के इस राजनयिक की खोज के लिए मोदी जी को श्रेय दिया जाना चाहिए।

REFERENCES

India gave the world Buddha and not Yuddha 'PM Modi at UNIA' *India today* web Desk Set 27, 2019, www.indiatoday.in

Chaudhary, Dipanjan Roy "How Buddhist outreach has always been a key elements of PM Narendra Modi is Act East policy" *The economic times* June 16 2017

Kishwar, Shantanu *'The Rising Role of Buddhism in India's Soft power*.

Yadav, Yatish "Soft Power, China gets its own Nalanda University, Shames India, "*The New India Express* June 5, 2017 No. 3

Kasturi, Charu Sudan 'Modi Government plans Buddhism blitz in cultural diplomacyrefocus' *The Telegraph* August 31, 2015 www.telegraphindia.co

P.M. stresses the need to shift from ideology to Philosophy, *The Hindu* Sep 3, 2015

PM Narendra Modi talks of Buddhism as prt of his outreach *DNA*, may 1 2018, www.dnaindia.com

World Focus Feb 2020